शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

- डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

हिन्दी भाषा के शिक्षण-अधिगम विधियों (Teaching-Learning Methods) में प्रत्यय संरचनावादी उपागमों का प्रयोग अधुनातन है। प्रस्तुत शोध आलेख भाषा शिक्षण के पारंपरिक विधि और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेत:- हिन्दी भाषा शिक्षण, प्रत्यय संरचनावादी उपागम, पारम्परिक उपागम, तुलनात्मक अध्ययन

सिद्धान्तविदों का मत है कि भाषा शिक्षण में प्रत्यय संरचनावाद के प्रयोग से भाषा ज्ञान, प्रयोग तथा बोध के नए प्रतिमान खोजे जा सकते है। परंपरागत भाषा शिक्षण की तुलना में इसके अन्यान्य लाभों के बावजूद भाषा शिक्षण-अधिगम में इसका प्रयोग सीमित है।

इस दृष्टि से भाषा-शिक्षण के परम्परागत और प्रत्यय संरचनावाद या कंस्ट्रक्टिविज़्म उपागमों के अभ्यास और तुलनात्मक अध्ययन के लिए एक शोध की व्यवस्था की गई। इसके अन्तर्गत बी. एड. के छात्राध्यापकों ने उच्च-प्राथमिक (छठी से आठवीं) कक्षाओं के विद्यार्थियों को परम्परागत और प्रत्यय संरचनावाद उपागमों द्वारा बारी-बारी से हिन्दी-शिक्षण किया। इस दौरान स्वनिर्मित बीस प्रश्नों के सप्तबिन्दु क्रम-निर्धारण मान के माध्यम से दोनों उपागमों के लाभों और सीमाओं का आकलन किया गया। अध्ययन में पाया गया कि परम्परागत सिद्धान्तों की तुलना में प्रत्यय संरचनावाद उपागम के प्रयोग द्वारा विद्यार्थियों की जिज्ञासा और अन्वेषणवृत्ति अधिक उद्बुद्ध होती है, जिससे वे प्रश्न करने, उत्तर खोजने, उदाहरण व तर्क देने जैसी गतिविधियों में सहभागी होते हैं। यह सहभागिता उनके द्वारा अधिगत ज्ञान, बोध व कौशल को अधिक सरल, सहज, रोचक, खोजपरक, अन्तर्क्रियात्मक और चिरस्थायी बनाती है। दूसरी ओर इस प्रविधि में शिक्षक का दायित्व यन्त्रवत् न रहकर सहयोगी, सहायक और सहान्वेषक का रहता है, जिसके कारण वह केवल शिक्षक नही रहता अपितु शिक्षक-अधिगमकर्त्ता हो जाता है। सारत: कहा जा सकता है कि प्रत्यय संरचनावाद उपागम द्वारा भाषा शिक्षण विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा अधिगम-शिक्षण प्रक्रिया के लिए नए युग की शुरुआत है।

शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के प्रयास विगत शताब्दी से ही किए जा रहे हैं। शिक्षा-दार्शनिकों, शिक्षा-मनोवैज्ञानिकों, प्रशासकों और शिक्षकों ने शिक्षण-प्रक्रिया को अधिकाधिक मनोवैज्ञानिक और विद्यार्थी केन्द्रित बनाने के लिए अथक प्रयास किए हैं। यूनेस्को द्वारा जेक्स डेलर की अध्यक्षता में नियुक्त अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की 'लर्निंग्-द ट्रेज़र विदिन' नामक रिपोर्ट (1996)[1] में इक्कीसवीं शताब्दी की शिक्षा के जिन चार स्तम्भों की बात कही गई है उनमें 'लर्निंग् टू नो' यानि ज्ञानार्जन की विधि को सीखना सर्वप्रथम है।

वाटसन (1913)[2] के व्यवहारवाद और पियाजे (1973)[3] के संज्ञानात्मक विकास के आगामी चरण के रूप में प्रत्यय संरचनावादी आन्दोलन की शुरुआत पिछली शताब्दी के सातवें दशक में हो चुकी थी। (किन्तु हमारे देश में इसका व्यवहार अभी भी अधिकांशत: पुस्तकों में ही है।) गोष्ठियों और सम्मेलनों में इसकी चर्चा होती है, परन्तु शिक्षक, जो इस सिद्धान्त के वास्तविक प्रयोक्ता हैं, प्राय: इस उपागम से अपरिचित है। विडम्बना यह है कि जो शिक्षक सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के दौरान इस उपागम के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक पक्षों से परिचित हो चुके हैं वे भी वास्तविक परिस्थितियों में इसके व्यवहार के प्रति उदासीन रहते हैं। ऐसे में अध्यापक शिक्षकों का दायित्व है कि छात्राध्यापकों को न केवल प्रत्यय संरचनावाद के सन्दर्भ से परिचित कराएँ अपितु व्यवहारिक परिस्थितियों में इसका अनुपालन भी सुनिश्चित कराएँ।

टिप्पणी - प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

विगत दशकों में भारतीय विद्यालयों की कक्षागत गतिविधियों में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। शैक्षिक अनुसन्धानों, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण के कारण शिक्षक-केन्द्रित शिक्षण-अधिगम प्रविधियों के स्थान पर विद्यार्थी-केन्द्रित अधिगम शिक्षण उपागमों का प्रचलन ज़ोर पकड़ रहा है। इस दृष्टिकोण से प्रत्यय संरचनावाद पारंपरिक सिद्धान्तों की अपेक्षा अधिक समीचीन और व्यवहारिक है। प्रत्यय संरचनावाद विद्यार्थी-केन्द्रित और आत्मप्रेरणा पर आधारित अधिगम सिद्धान्त है, जिसमें अध्यापक की ज़िम्मेदारी अधिगम परिस्थितियों के निर्माण और विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों के निवारण तक सीमित होती है। इस सिद्धान्त के अन्तर्गत विद्यार्थी अपने अनुभव और प्रयास से ही ज्ञान, बोध और कौशल का अधिगम करता है। इस सन्दर्भ में बेडनर (1991)[4] का वक्तव्य विशेषत: ध्यातव्य है कि ''प्रत्येक अधिगमकर्त्ता बाह्यजगत में मौजूद ज्ञान के सन्दर्भों को अपने ही अनुसार निर्मित करता है। ये प्रत्यय उसके अनुभवों की व्यक्तिगत व्याख्या होती है।'' इससे स्पष्ट है कि अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की सक्रियता का कितना महत्त्व है।

भाषा के शिक्षण-माध्यम के रूप में प्रत्यय संरचनावाद की ख्याति का एक कारण इसकी बहुरूपता और लचीलापन है। कतिपय विद्वान प्रत्यय संरचनावाद को सिद्धान्त विशेष न मानकर अन्यान्य उपागमों के समन्वय के रूप में स्वीकार करते हैं, जबकि अन्य के अनुसार यह बहुरूपता और लोच ही प्रत्यय संरचनावाद की सबसे बड़ी शक्ति है। कक्षागत शिक्षण में प्रयोज्यमान प्रत्यय संरचनावाद अपने तीन प्रकारों यानि 'संज्ञानात्मक', 'सामाजिक' और 'मौलिक' का समन्वित रूप है। यही कारण है कि इस सिद्धान्त के अन्तर्गत किन्ही निश्चित शिक्षण-अधिगम प्रविधियों की अनुशंसा नहीं की जाती अपितु कक्षा, स्तर, समय, अवसर, परिस्थितियों, संसाधनों, परिवेश इत्यादि के अनुसार अधुनातन और रचनात्मक प्रविधियों का अन्वेषण और प्रयोग किया जाता है। प्रत्यय संरचनावादी पाठयोजना में विद्यार्थियों के स्तर पर एकाग्र खोज, मस्तिष्क चित्र निर्माण, अन्वेषण, संवर्धन, गुणवत्ता विकास, निर्देशित व स्वतन्त्र अभ्यास, विवेचना, मूल्यांकन, संक्षिप्तीकरण और समापन के लिए लचीली व्यवस्था पाई जाती है। साथ ही पाठ योजना के अन्त में शिक्षक के स्तर पर पाठ के नियोजन और कार्यान्वयन की मीमांसा या अनुचिन्तन की व्यवस्था की जाती है ताकि पाठयोजना अथवा उसके कार्यान्वयन में अनुभूत समस्याओं तथा कठिनाइयों का निराकरण आगामी पाठयोजनाओं और उनके क्रियान्वयन में किया जा सके।

भाषा अधिगम में प्रत्यय संरचनावाद के प्रयोग पर अनेक अनुसन्धान, प्रयोग और व्याख्याएँ हुई हैं। इनमें से अधिकांश के अनुसार भाषा अधिगम में प्रत्यय संरचनावाद के प्रयोग के लिए पाठ्यक्रम, शिक्षक-प्रशिक्षण, सहायक-उपकरणों, संसाधन-विकास, कक्षागत-संरचना, मूल्यांकन-प्रक्रिया, विद्यालय-प्रशासन इत्यादि के स्तर पर युगान्तकारी बदलावों की आवश्यकता है। जिससे विद्यार्थियों को शिक्षक-केन्द्रित और नियन्त्रित अधिगम-गतिविधियों के स्थान पर स्वयं के प्रयास और पहल से ज्ञान, बोध तथा कौशल के अधिगम के लिए परिवेश-निर्माण में सहायता प्रदान की जा सके। ब्रुक्स (1993)[5] के अनुसार 'प्रत्यय संरचनावाद के सम्यक् अनुपालन के लिए सर्वप्रथम नवाचारी पाठ्यक्रम की आवश्यकता है ताकि विद्यार्थियों को पूछने, खोजने, अनुप्रयोग, सहयोग और खोज के आनन्द का अनुभव करने का अवसर उपलब्ध कराया जा सके।'

भाषा अधिगम में प्रत्यय संरचनावाद जैसी अधुनातन विधियों के अनुपालन में शिक्षकों की अनिच्छा पर विलियम एम, बर्डन आर. (1997)[6] की टिप्पणी है कि 'शिक्षक-प्रशिक्षण के दौरान आधुनिक और नवाचारी शिक्षण-अधिगम सिद्धान्तों का अध्ययन करने वाले विद्यार्थी जब शिक्षक के रूप में विद्यालय में प्रवेश करते है। तो अधिकांश शिक्षकों को परम्परागत विधियों का प्रयोग करते देखकर वे भी अपनी विशेषता की उपेक्षा करने लगते हैं। उन्हें कक्षा में जाकर परम्परागत विधियों से शिक्षण करना सरल अनुभव होता है क्योंकि वे विद्यालय प्रशासन को नवाचारी प्रविधियों के अनुपालन के प्रति सशंक और निरुत्साही पाते हैं। इसलिए परम्परा से स्वीकृत शिक्षक-केन्द्रित विधियों के प्रयोग में सहजता अनुभव करते हैं। इस प्रकार प्रत्यय संरचनावाद जैसे नवाचारी अधिगम-शिक्षण उपागमों के प्रयोग में निपुण शिक्षक भी परिस्थितिगत कारणों से अधिगम-शिक्षण और मूल्यांकन के लिए इनका प्रयोग नहीं कर पाते। जिन विद्यालयों में गणित, विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन जैसे विषयों में कम्प्यूटर आधारित अधिगम, स्मार्ट-बोर्ड और अन्तर्क्रियात्मक पद्धतियों का अनुपालन हो रहा है, वहाँ भी भाषा

टिप्पणी – प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शिक्षण के विषय में परम्परागत प्रविधियों का ही प्रयोग किया जा रहा है। यह कथन हिन्दी के साथ ही संस्कृत और अंग्रेज़ी भाषाओं के विषय में भी समान रूप से सत्य है।

भाषा-शिक्षण में प्रत्यय संरचनावाद के अनुपालन के लिए संसाधन और सहायक उपकरणों के स्तर पर करणीय उपायों के विषय में मर्फी (1997)[7] का मन्तव्य है कि तकनीक और प्रत्यय संरचनावाद के बीच सीधा सम्बन्ध है, जैसा कि हम कम्प्यूटर आधारित अधिगम के परिवेश से अनुभव कर सकते है। कम्प्यूटर, इंटरनेट और ईमेल जैसे बहुपयोगी उपकरणों का प्रयोग रचनात्मक परिवेश तैयार करता है, जिसमें विद्यार्थी अपने प्रयास से रुचिपूर्वक खोज और अनुभव द्वारा ज्ञान, बोध तथा कौशल अर्जित कर सकते हैं।

प्रत्यय संरचनावाद में भाषा के अधिगम के साथ ही उसके मूल्यांकन को व्यापक और सहयोगपूर्ण बनाने पर बल दिया जाता है। डिक तथा कैरी (1996)[8] का विचार है कि प्रत्यय संरचनावादी मूल्यांकन में चार चरणों का समावेश होना चाहिए। ये हैं-विशेषज्ञ समीक्षा, व्यक्तिगत मूल्यांकन, सामूहिक मूल्यांकन और प्रायोगिक मूल्यांकन। स्वाभाविक है कि इन उपायों से मूल्यांकन को व्यक्तिपरक और सामयिक के स्थान पर वस्तुपरक और व्यापक बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत उद्धरणों से स्पष्ट है कि भाषा शिक्षण में प्रत्यय संरचनावाद के उपयोग के लिए न केवल शिक्षक और विद्यार्थी अपितु विद्यालय, संसाधान, प्रशासन और तकनीकी स्तर पर भी अनेक बदलावों और सुधारों की अपेक्षा है। जिन संस्थानों ने इन दिशाओं में अपेक्षित पहल की है, उनका अनुभव है कि प्रत्यय संरचनावाद के व्यवहार से कक्षागत अधिगम-शिक्षण गतिविधियों और मूल्यांकन प्रणाली में चिरकांक्षित बदलाव लाए जा सकते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत हिन्दी भाषा-अधिगम में परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद के प्रयोग के लाभों का अध्ययन किया गया। इसके प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं –

- परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों की भूमिका का तुलनात्मक आकलन करना।
- परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान शिक्षक की भूमिका का तुलनात्मक आकलन करना।
- परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के अधिगम और संधारण की तुलना करना।
- परम्परागत और प्रत्यय संरचनावाद द्वारा भाषा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अधिगम के अवसरों की तुलना करना।

शोध परिकल्पना-

- भाषा शिक्षण के परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थी अधिक मुखर और सक्रिय रहते हैं।
- परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों के सहयोगी और सहाधिगामी की भूमिका में रहते हैं।
- परम्परागत उपागमों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद उपागम के प्रयोग से विद्यार्थियों का अधिगम अधिक गहन, व्यापक और चिरस्थायी होता है।
- परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद उपागम द्वारा विद्यार्थियों की भाषा अधिगम स्वयं-प्रयास से तथा सहपाठियों व शिक्षक के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा होता है।

टिप्पणी – प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

शोध विधि-

प्रस्तुत शोध में छात्र अध्यापकों/छात्राध्यापिकाओं को प्रत्यय संरचनावाद के दार्शनिक, सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्षों से अवगत कराने के उपरान्त इस उपागम की मूलभावना के अनुरूप पाठयोजना बनाने हेतु प्रेरित किया गया। इस प्रकार की पाठयोजना में विद्यार्थियों के स्तर पर एकाग्र खोज, मस्तिष्क चित्र निर्माण, अन्वेषण, संवर्धन, गुणवत्ता विकास, निर्देशित व स्वतन्त्र अभ्यास, विवेचना, मूल्यांकन, संक्षिप्तीकरण और समापन के लिए लचीली व्यवस्था की गई। पाठ योजना के अन्त में पाठ्यवस्तु के नियोजन और कार्यान्वयन की मीमांसा या अनुचिन्तन की व्यवस्था की गई। छात्र अध्यापकों को निर्देश दिया गया कि विद्यार्थियों की प्रतिक्रिया और माँग के अनुसार पाठयोजना के चरणों, उनकी अवधि और प्रविधि में यथोचित बदलाव किया जा सकता है।

अध्ययन में शामिल छात्रध्यापकों ने माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों के सम्मुख बीस पाठ-योजनाओं का क्रियान्वयन किया, जिनमें से दस परम्परागत भाषा-शिक्षण उपागमों और शेष दस प्रत्यय संरचनावाद उपागम के अनुसार बनाई गई थी। पाठ-योजनाओं के प्रस्तुतिकरण के दौरान एक स्वनिर्मित बीस प्रश्नों के सप्तबिन्दु क्रम-निर्धारण मान द्वारा दोनों प्रकार की पाठयोजनाओं के कार्यान्वयन के दौरान विद्यार्थियों और छात्रध्यापक प्रेक्षकों के अनुभवों का संकलन किया गया। प्रश्नावली में कालांश के आरम्भ से समाप्ति पर्यन्त विद्यार्थियों और शिक्षक द्वारा अधिगम, अधिगम में संलिप्तता और अधिगम मूल्यांकन सम्बन्धी गतिविधियों का अवलोकन किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मात्रात्मक विधियों द्वारा किया गया जिनमें मुख्यत: प्रतिशत विश्लेषण विधि का प्रयोग किया गया।

शोध निष्कर्ष-

अध्ययन के दौरान जब नियन्त्रित समूह पर परम्परागत के अतिरिक्त प्रत्यय संरचनावाद उपागम द्वारा भाषा शिक्षण का प्रयोग किया गया तो अत्यन्त उत्साहजनक परिणाम प्राप्त हुए। प्रश्नावलियों के विश्लेषण के परिणामस्वरूप पाया गया कि परम्परागत प्रविधियों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावादी उपागम से विद्यार्थियों में सक्रियता और उत्तरदायित्व की भावना का विकास हुआ। दूसरी ओर इस प्रक्रिया में शिक्षक गतिविधियों की शुरुआत तो करते हैं। लेकिन उनका संचालन अधिकांशत: विद्यार्थियों द्वारा ही होता है। यहाँ अध्ययन के परिणामों को निर्धारित उद्देश्यों के अनुसार प्रस्तुत किया जा रहा है -

- उद्देश्य-1: परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों की भूमिका का तुलनात्मक आकलन करना।
- परिकल्पना-1: भाषा शिक्षण के परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थी अधिक मुखर और सक्रिय रहते हैं।

तालिका-1

परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्रविधियों के प्रयोग के दौरान विद्यार्थियों की भूमिका का तुलनात्मक आकलन।

विश्लेषण बिन्दु शिक्षण उपागम	पाठ्यवस्तु के विकास में सहयोग (प्रतिशत)	खोज एवं अभ्यास में सहभागिता (प्रतिशत)	कक्षागत गतिविधियों में सहयोग (प्रतिशत)	उदाहरण, दृष्टान्त और व्याख्या में सहभागिता (प्रतिशत)	पाठ्यवस्तु के साधारणीकरण में सहभागिता (प्रतिशत)

टिप्पणी - प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

परम्परागत	32	27	36	29	35
प्रत्यय संरचनावाद	87	79	83	91	90

विवेचना-

शोधार्थियों द्वारा पूरित क्रम निर्धारण मान के विश्लेषण द्वारा ज्ञात हुआ कि भाषा शिक्षण के परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को स्वयं अध्ययन, प्रश्न पूछने व उनका उत्तर देने, कक्षागत गतिविधियों और प्रकरणाधारित चर्चा अथवा वाद-विवाद में सहभागिता के पर्याप्त अवसर प्राप्त हुए। परम्परागत उपागमों द्वारा शिक्षण के दौरान पाठ्यवस्तु के विकास, खोज एवं अभ्यास, कक्षागत गतिविधियों के संचालन, पाठ्यवस्तु से सम्बद्ध उदाहरण, दृष्टान्त, व्याख्या तथा साधारणीकरण के सन्दर्भ में 27 से 35 प्रतिशत प्रेक्षकों की राय में विद्यार्थियों की भूमिका अग्रणी रही जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम द्वारा शिक्षण के दौरान यह प्रतिशत 83 से 91 के बीच रहा। इससे स्पष्ट है कि परंपरागत की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों की भूमिका अधिक मुखर और सक्रिय रहती है। इससे उनके आत्मविश्वास और अध्येताभाव का विकास सुनिश्चित होता है।

- उद्देश्य-2: परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान शिक्षक की भूमिका का तुलनात्मक आकलन करना।
- परिकल्पना-2: परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान शिक्षक विद्यार्थियों के सहयोगी और सहाधिगामी की भूमिका में रहते हैं।

तालिका- 2

परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्रविधियों के प्रयोग के दौरान शिक्षकों की भूमिका का तुलनात्मक आकलन।

विश्लेषण बिन्दु शिक्षण उपागम	विद्यार्थियों की सहभागिता (प्रतिशत)	स्तरानुरूप पाठ्यवस्तु-संयोजन (प्रतिशत)	मस्तिष्क चित्रनिर्माण द्वारा पाठ्य वस्तु-अन्तरण (प्रतिशत)	उत्तरवर्ती तथ्यों की खोज हेतु उत्प्रेरण (प्रतिशत)	गुणवत्ता-विकास हेतु प्रयास (प्रतिशत)
परम्परागत	36	33	33	28	30
प्रत्यय संरचनावाद	78	82	67	89	69

विवेचना- क्रम निर्धारण मान के विश्लेषण द्वारा स्पष्ट है कि परम्परागत कक्षा में अधिकांश शिक्षण-अधिगम गतिविधियाँ शिक्षक के द्वारा संचालित होती है। जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम के प्रयोग के दौरान इनका प्रतिशत काफी कम रह जाता है। उक्त तालिका समाविष्ट घटकों के विषय में प्रेक्षकों के आँकड़ों से स्पष्ट है कि परंपरागत उपागमों में विद्यार्थियों की सहभागिता, स्तरानुरूप पाठ्यवस्तु-संयोजन, मस्तिष्क चित्रनिर्माण,

टिप्पणी – प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

उत्तरवर्ती तथ्यों की खोज हेतु उत्प्रेरण और गुणवत्ता-विकास हेतु विधेय प्रयासों की संभाव्यता मात्रा 28 से 36 प्रतिशत के बीच है जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम के प्रयोग से यह संभाव्यता 67 से 89 प्रतिशत तक बढ़ जाती है। इसका तात्पर्य है कि परम्परागत कक्षा में भाषा शिक्षक पाठ को पढ़ने, अनुवाद करने, शब्दार्थ स्पष्ट करने, व्याख्या करने, प्रश्न पूछने, समाधान करने आदि कार्यों में स्वयं ही संलिप्त रहते है। जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम के अनुपालन से शिक्षक की भूमिका उत्प्रेरक और संचालक की हो जाती है।

- उद्देश्य-3: परम्परागत और प्रत्यय संरचनावादी उपागमों द्वारा हिन्दी शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के अधिगम और संधारण की तुलना करना।
- परिकल्पना-3: परम्परागत उपागमों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद उपागम के प्रयोग से विद्यार्थियों का अधिगम अधिक गहन, व्यापक और चिरस्थायी होता है।

तालिका-3

परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्राविधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों के अधिगम और संधारण स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

विश्लेषण बिन्दु शिक्षण उपागम	पाठ्यवस्तु आधारित -विवेचना (प्रतिशत)	साधारणीकरण हेतु उत्प्रेरण (प्रतिशत)	अधिगम परीक्षण के समावेशी प्रयास (प्रतिशत)	याख्या के लिए अवसर देना (प्रतिशत)	स्वयं अभ्यास के लिए अवसर देना (प्रतिशत)
परम्परागत	42	35	30	36	40
प्रत्यय संरचनावाद	38	65	91	84	60

विवेचना- प्रस्तुत आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के अधिगम और संधारण स्तर के सन्दर्भ में अनेक बिन्दुओं पर परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्रविधियों में व्यापक भिन्नता है। पाठ्यवस्तु आधारित-विवेचना, साधारणीकरण हेतु उत्प्रेरण अधिगम परीक्षण के समावेशी प्रयास, व्याख्या और स्वयं अभ्यास सन्दर्भ में परम्परागत उपागमों में केवल 30 से 42 प्रतिशत अवसर उपलब्ध पाए गए जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम में इनकी परिधि 38 से 91 प्रतिशत तक थी। इससे स्पष्ट है कि एक ओर जहाँ विद्यार्थियों के अधिगम स्तर के विषय में आलोच्य प्रविधियों में व्यापक असमानता है। वहीं अधिगम परीक्षण के समावेशी प्रयास और पाठ्यवस्तु की व्याख्या के अवसर के सन्दर्भ में भी दोनों उपागमों में काफी अन्तर है। अत: कहा जा सकता है कि परम्परागत की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद उपागम के प्रयोग से विद्यार्थियों के अधिगम को अधिक गहन, व्यापक और चिरस्थायी किया जा सकता है।

- उद्देश्य-4: परम्परागत और प्रत्यय संरचनावाद द्वारा भाषा शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों को स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अधिगम के अवसरों की तुलना करना।
- परिकल्पना-4: परम्परागत सिद्धान्तों की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावाद उपागम द्वारा विद्यार्थियों भाषा अधिगम स्वयं-प्रयास से तथा सहपाठियों व शिक्षक के साथ अन्तर्क्रिया द्वारा होता है।

टिप्पणी - प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

तालिका- 4, परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्रविधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों के स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अधिगम के अवसरों का तुलनात्मक अध्ययन।

विश्लेषण बिन्दु शिक्षण उपागम	उदाहरण औरदृष्टान्त प्रस्तुति	पाठ्यवस्तु की विवेचना	एकल और समूह अध्ययन	साधारणी करण	समावेशी मूल्यांकन
परम्परागत	24	36	28	35	25
प्रत्यय संरचनावाद	76	80	73	67	85

विवेचना-

अध्ययन के दौरान एकत्र आंकड़ों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों के स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अधिगम के अवसरों के सन्दर्भ में परंपरागत एवं प्रत्यय संरचनावादी प्रविधियों में पर्याप्त भिन्नता है। परम्परागम शिक्षण उपागमों में विद्यार्थियों को स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अधिगम के लिए उपलब्ध होने वाले अवसरों का औसत प्रतिशत महज 15 से 36 है, वहीं प्रत्यय संरचनावादी उपागम के प्रयोग के दौरान इनका प्रतिशत 67 से 85 रहता है। इस आकलन से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों को स्वतन्त्र और सहयोगी अध्येता बनाने में प्रत्यय संरचनावादी उपागम की भूमिका काफी उपयोगी है।

शोध निष्कर्ष-

प्रस्तुत अध्ययन में सहभागी सभी पक्षों ने स्वीकार किया कि परम्परागत की अपेक्षा प्रत्यय संरचनावादी उपागम द्वारा भाषा शिक्षण के दौरान कक्षा में विद्यार्थियों की सक्रियता, गम्भीरता और सहभागिता बढ़ जाती है। परम्परागत प्रविधियों द्वारा शिक्षण के दौरान कक्षा में शिक्षक की तुलना में विद्यार्थियों की सक्रियता नगण्य रहती है, जबकि प्रत्यय संरचनावादी उपागम के प्रयोग के दौरान स्थिति विपरीत 27 से 35 फीसदी से बढ़कर 83 से 91 प्रतिशत हो जाती है।

जहाँ तक पाठ्यवस्तु के अधिगम और अधिगत प्रकरण के साधारण का प्रश्न है तो इस विषय में भी प्रत्यय संरचनावादी उपागम परम्परागत पद्धतियों की अपेक्षा अधिक उपयोगी प्रमाणित हुआ। कक्षा के दौरान और अन्त में पूछे गए प्रश्नों की प्रतिक्रिया में विद्यार्थियों के उत्तरों से स्पष्ट हुआ कि जिन प्रकरणों के अधिगम में विद्यार्थियों की सहभागिता थी उनके उत्तर अधिक रचनात्मक और त्वरित प्राप्त हुए। जबकि परम्परागत प्रविधियों द्वारा शिक्षण में केवल उन्ही प्रकरणों के उत्तर कक्षा के अन्त तक प्राप्त हुए जिनमें दोहराव और सहायक उपकरणों के प्रयोग के चलते विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित की गई थी।

विद्यार्थियों में स्वयं तथा समूह के सदस्य के रूप में अध्ययन की प्रवृत्ति के विकास के लिए प्रत्यय संरचनावादी उपागम की उपयोगिता अद्वितीय पाई गई। परम्परागत प्रविधियों द्वारा शिक्षण में जहाँ विद्यार्थी प्रत्येक शिक्षण गतिविधि के लिए शिक्षक की बाट जोहते हैं और यदि शिक्षक उन्हें किसी गतिविधि को करने का निर्देश नही देता है तो निश्चिंत बैठते हैं। वहीं प्रत्यय संरचनावादी उपागम द्वारा शिक्षण के दौरान विद्यार्थी स्वयं प्रश्न करते हैं, गतिविधियाँ संचालित करते हैं और शिक्षक की सहायता से अधिगम-शिक्षण को गतिमान रखते हैं।

परामर्श-

विद्यालय के अन्यान्य विषयों की तुलना में भाषा शिक्षण का क्षेत्र अभी भी परम्परागत प्राविधियों के बन्धन में है। इसलिए भाषा की कक्षा में शिक्षक अभी भी पाठ पढ़ने, अनुवाद करने, व्याकरण समझाने और इसी

टिप्पणी - प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

हिन्दी भाषा शिक्षण में परम्परागत तथा प्रत्यय संरचनावादी (कंस्ट्रक्टिविज़्म) उपागमों के प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० श्रुतिकान्त पाण्डेय

सहायक प्रॉफेसर, ऐमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन, ऐमिटी विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, नोएडा

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

प्रकार की एकपक्षीय गतिविधियों में रत दिखाई देते हैं। इसके स्वाभाविक परिणाम के रूप में विद्यार्थी भी परम्परागत शिष्यों की तरह उनके अनुगामी और आज्ञाकारी बनने में ही स्वयं को कृतार्थ मानते हैं। प्रस्तुत शोध इस परिपाटी की सीमाओं से परिचित कराने और प्रत्यय संरचनावाद जैसे अधुनातन शिक्षण उपागमों के लाभों को सम्मुख लाने की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है।

प्रस्तुत शोध के परिणामों से ज्ञात होता है कि हिन्दी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में व्याप्त शिथिलता, अवैज्ञानिकता और परम्परावादिता पर तुरन्त विराम लगाने की ज़रूरत है ताकि हिन्दी भाषा के शिक्षण को सक्रिय, अन्तर्क्रियात्मक और प्रगतिशील बनाया जा सके। गतानुगतिकता के स्थान पर रचनात्मकता और नवाचारों को स्थान देने से हिन्दी के शिक्षकों और विद्यार्थियों में न केवल भाषायी कौशलों का विकास होगा अपितु सृजनात्मकता का मार्ग भी प्रशस्त होगा। प्रत्यय संरचनावाद के प्रभाव से हिन्दी शिक्षण-अधिगम में भी कम्प्यूटर, इंटरनेट, पावर-प्वाइंट प्रस्तुतिकरण, नाट्य-मंचन जैसी क्रियात्मक गतिविधियों का प्रयोग किया जा सकता है। इससे हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों को जागृत और सक्रिय बनाने में सहायता मिलेगी।

सन्दर्भ-

1. एन इंटरप्रिटेशन ऑफ पियाजेज़ कंस्ट्रक्टिविज़्म, ई. वी. ग्लैसरफैल्ड, रिव्यू इंटरनेशनल डि फिलोसफी, 36 (4) 612-635, (1982)
2. द सिस्टमैटिक डिजाइन ऑफ इन्स्ट्रक्शन, डब्ल्यू. डिक और एल. कैरी, हार्पर कॉलिन्स कॉलेज पब्लिशर्स, न्यूयार्क, (1996)
3. मैमरी एण्ड इंटेलिजेन्स, जे पियाजे और बी. इनहेल्डर, रटलेज एण्ड केगन पॉल लण्डन, (1973)
4. थ्योरी इनटू प्रैक्टिस: हाउ डू वी थिंक? ए के बेडनर और डी. कनिंघम, जे डी ईगलवुड कम्पनी, कोलरेडो, (1991)
5. इन सर्च ऑफ अंडरस्टैंडिंग्: द केस फॉर कंस्ट्रक्टिविस्ट क्लासरूम्स्, जे जी ब्रुक्स और ब्रुक्स, एम. जी. एलेग्ज़ेंड्रिया, (1993)
6. कंस्ट्रक्टिविज़्म: फॉम फिलॉसफी टू प्रैक्टिस, मर्फी एलिजाबेथ, रिप्रॉड्यूस्ट बाई ई. डी. आर. एस, (ई डी 444 एस पी 966) पोकरसन, (1997)
7. हाउ टैक्नोलॉजी एड्स कंस्ट्रक्टिविज़्म इन द सोशल स्टडीज़ क्लासरूम, एम. राइस और ई. विल्सन, हेलन वाइट रेड एजुकेशनल फाउण्डेशन, वॉशिंगटन डी. सी., (1999)
8. 'लर्निंग् - द ट्रेज़र विदिन' यूनेस्को द्वारा जेक्स डेलर की अध्यक्षता में नियुक्त अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट, (1996)
9. साइक्लॉजी एज़ द बिहेवियरिस्ट व्यू इट, जे. बी. वाटसन, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 158-177, (1913)

टिप्पणी - प्रस्तुत शोधपत्र में 'छात्राध्यापक' पद का प्रयोग बी. एड. के विद्यार्थियों के लिए किया गया है जो 'शिक्षण अभ्यास' सत्र के दौरान विद्यालयों में शिक्षण करते हैं।

SHODH SANCHAYAN